इकाई 5 फीचर लेखन की विशेषताएं

इकाई की रूपरेखा

5.0 उद्देश्य

5.1 प्रस्तावना

5.2 फीचर लेखन : पूर्व तैयारी

5.2.1 विषय का चयन

5.2.2 शोध

5.2.3 सामग्री संग्रह

5.2.4 साक्षात्कार और यात्रा

5.2.5 फोटो, रेखांकन और ग्राफिक्स

5.2.6 आलेख की योजना और प्रस्तुति

5.3 फीचर लेखन की प्रक्रिया

5.3.1 प्रारंभ

5.3.2 फीचर का ढांचा

5.3.3 फीचर का विकास : गति और प्रवाह

5.3.4 उद्धरण

5.3.5 फीचर की भाषा

5.4 फीचर लेखन में ध्यान रखने योग्य बातें

5.5 सारांश

5.6 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

5.0 उद्देश्य

हिंदी में फीचर लेखन के पाठ्यक्रम के खंड एक की इस पांचवीं इकाई का उद्देश्य आपको समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में फीचर लेखन की विशेषताओं से परिचित कराना है। इस इकाई के अध्ययन के बाद आप फीचर लेखन की प्रक्रिया के विभिन्न चरणों और उनकी बारीकियों से परिचित हो सकेंगे। इसके अलावा इस इकाई में फीचर लेखन से संबंधित उन बिंदुओं को भी समेटने की कोशिश की जाएगी, जिनके अध्ययन के बाद :

- आप यह समझ सकेंगी/सकेंगे कि फीचर लेखन के लिए किस तरह और कैसे तैयारी की जाए;
- आप फीचर लेखन के लिए सामग्री संकलन में शोध की भूमिका और महत्व से परिचित हो सकेंगी/सकेंगे;
- फीचर लेखन की योजना बनाते हुए आप उसके साथ फोटो, रेखांकन और ग्राफिक्स की आवश्यकता और महत्व को समझ सकेंगी/सकेंगे;

- आप फीचर लेखन की प्रक्रिया के विभिन्न चरणों और उसमें ध्यान रखने योग्य बातों से अवगत हो सकेंगी/सकेंगे;
- फीचर लेखन की प्रक्रिया की विशेषताओं से परिचित हो सकेंगी/सकेंगे
- और फीचर लेखन में भाषा, विराम चिह्नों और उद्धरणों की भूमिका एवं महत्व से परिचित हो सकेंगी/सकेंगे।

5.1 प्रस्तावना

समाचारपत्रों और पत्रिकाओं में फीचर का महत्व लगातार बढ़ता जा रहा है। इसी का नतीजा है कि फीचर अब सिर्फ फीचर पृष्ठों तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि वह समाचार फीचर के रूप में अखबार के पहले पन्ने से लेकर आखिरी पन्ने तक छाया हुआ है। जाहिर है कि समाचारपत्रों और पत्रिकाओं में फीचर की मांग बढ़ रही है। फीचर लेखकों की कमी नहीं है, लेकिन अच्छा फीचर लिखने वाले पत्रकारों और लेखकों की सचमुच भारी कमी है।

इसकी वजह यह है कि फीचर लेखन समाचार लेखन से अलग है। बहुतेरे लेखक और पत्रकार समाचार और फीचर लेखन के बीच के अंतर और उनकी विशेषताओं को नहीं समझ पाते हैं। दरअसल, समाचार लेखन का एक निश्चित ढांचा है लेकिन फीचर का कोई निश्चित ढांचा नहीं होता। इसलिए समाचार लेखन का तो एक फॉर्मूला है लेकिन फीचर लेखन का कोई फॉर्मूला नहीं है। इसका अर्थ यह हुआ कि फीचर लेखन फॉर्मूलाबद्ध नहीं हो सकता। जाहिर है कि फीचर लेखन में लेखक के पास काफी स्वतंत्रता होती है और वह विषय के मिजाज, अखबार या पत्रिका के चरित्र और पाठकों की रुचियों को ध्यान में रखते हुए अपनी खास शैली में फीचर लिख सकता है।

फीचर लेखन अपने मूल स्वभाव में सृजनात्मक लेखन का हिस्सा है। हालांकि वह साहित्यिक लेखन नहीं है और समाचारीय फीचर का संबंध सूचनाओं, तथ्यों और विश्लेषण से अधिक होता है फिर भी उसमें वातावरण, ऊर्जा, गति और नाटकीयता की अहम भूमिका होती है। फीचर लेखक के सामने असली चुनौती यह होती है कि वह एक निश्चित समय सीमा (डेडलाइन) और अखबार या पत्रिका में दी गई निश्चित जगह (स्पेस) के भीतर कैसे अच्छा फीचर लिखे। उसके पास एक साहित्यकार की तरह असीमित समय या जगह नहीं होता है। ऐसे में, फीचर लेखक के लिए जरूरी है कि वह फीचर की पूरी योजना तैयार करे और उसके अनुशासन में बंधकर काम करे।

असल में, एक अच्छे फीचर लेखक को लिखना शुरू करने से पहले यह स्पष्ट रूप से पता होना चाहिए कि फीचर में वह क्या कहना चाहता है और जो कहना चाहता है। उसका क्रम या सिलसिला क्या होगा। किसी भी फीचर लेखक के लिए यह समझना सबसे ज्यादा जरूरी है कि फीचर कहां से शुरू होगा, कैसे आगे बढ़ेगा और कहां खत्म होगा। कहने का तात्पर्य यह कि फीचर का पूरा नक्शा और उसके महत्वपूर्ण बिंदु लेखक के दिमाग में बिल्कुल स्पष्ट होने चाहिए।

इस इकाई में हम फीचर लेखन की विशेषताओं को लेखन प्रक्रिया के संदर्भ में समझने की कोशिश करेंगे। इस इकाई का मुख्य जोर फीचर लेखन की कला और उसकी तकनीक से परिचित कराना होगा।

5.2 फीचर लेखन : पूर्व तैयारी

फीचर लेखन शुरू करने से पहले लेखक को उसकी पर्याप्त तैयारी करनी चाहिए। बिना तैयारी यानी होमवर्क के अच्छा फीचर नहीं लिखा जा सकता। अच्छे फीचर के लिए लेखक को विभिन्न स्रोतों से सामग्री जुटाने में काफी मेहनत करनी पड़ती है। फिर भी योजना बनाकर काम किया जाए तो मुश्किल काफी हद तक आसान हो जाती है। दरअसल, योजना बनाकर काम करने से न सिर्फ तयशुदा समय के अंदर फीचर तैयार करने में सहूलियत होती है, बल्कि बल्कि फीचर में गलतियों या कमियों की गुंजाइश भी कम रह जाती है।

फीचर लेखन की योजना के कई चरण होते हैं। इन सभी प्रमुख चरणों की चर्चा हम क्रमानुसार आगे करेंगे।

5.2.1 विषय का चयन

यह स्पष्ट करना जरूरी है कि हर समाचार पत्र और पत्रिका में फीचर के विषयों के चयन की प्रक्रिया अलग–अलग है। यही नहीं, कुछ बड़े समाचार पत्रों और पत्रिकाओं को छोड़कर अधिकांश में अलग से कोई फीचर डेस्क या फीचर संपादक नहीं होता। कई बड़े समाचार पत्र और पत्रिकाएं आमतौर पर अपने पत्रकारों और फीचर लेखकों के अलावा अन्य लेखकों के फीचर नहीं छापते। दूसरी ओर, छोटे और मझोले स्तर के समाचार पत्र और पत्रिकाओं में न सिर्फ स्वतंत्र फीचर लेखकों के फीचर सहर्ष स्वीकार किए जाते हैं, बल्कि उन्हें अपने मनपसंद विषयों पर फीचर लिखने के लिए प्रोत्साहित भी किया जाता है।

समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में फीचर के लिए विषयों का चयन लेखक भी करता है और कई बार फीचर संपादक भी लेखकों को फीचर के विषय सुझाते हैं। बड़े समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में आमतौर पर फीचर संपादक विषयों और उसके अनुरूप फीचर लेखकों का चुनाव करते हैं लेकिन कई बार फीचर लेखक द्वारा सुझाया गया विषय पसंद आने पर फीचर संपादक उससे उस विषय पर फीचर लिखने के लिए कह सकते हैं। छोटे और मंझोले स्तर के समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में संपादक या फीचर संपादक फीचर लेखकों से यह अपेक्षा करते हैं कि वे समाचारपत्र या पत्रिका के कलेवर के अनुसार फीचर के कुछ विषय सुझाएंगे जिनमें से किसी एक विषय पर उन्हें फीचर लिखने के लिए कहा जा सकता है। हालांकि कई बार बिना किसी पूर्व बातचीत या सलाह के किसी विषय पर सीधे फीचर तैयार करके भेजने पर भी उसके छपने की संभावना रहती है। लेकिन फीचर लेखकों खासकर स्वतंत्र (फ्रीलांस) लेखकों को इससे बचना चाहिए। इसकी वजह यह है कि ऐसे अयाचित फीचर पर संपादक का ध्यान कम ही जाता है।

बेहतर होगा कि आप जिस अखबार या पत्रिका के लिए फीचर लिखना चाहते हैं, उसके फीचर संपादक या प्रभारी से पहले मिलकर विषय पर चर्चा कर लें। लेकिन फीचर प्रभारी या संपादक से मिलने से पहले यह जरूरी है कि आप स्वयं तीन–चार विषयों पर अच्छी तरह से सोच–विचार लें। दरअसल, फीचर के लिए उपयुक्त विषय की खोज किसी भी नए फीचर लेखक के लिए सबसे बड़ी चुनौती होती है। अगर आप फीचर के लिए नये विषय या विचार खोजने में माहिर हो जाते हैं तो समझिए कि फीचर लेखन की एक तिहाई मशक्कत कम हो गयी।

सवाल यह है कि फीचर के लिए विषय या आइडिया कैसे खोजा या विकसित किया जाए। कहने की जरूरत नहीं है कि इसका कोई निश्चित फार्मूला नहीं है। कई बार सोचते सोचते विचार खुद–ब–खुद चलकर आप तक पहुंच जाता है। लेकिन अधिकतर मौकों पर आपको खुद विषय की तलाश करनी पड़ती है। आप माने या न मानें, लेकिन आपके चारों ओर फीचर की सामग्री बिखरी होती हैं। जरूरत सिर्फ इस बात की है कि आप अपने को उसे खोजने और विकसित करने के कौशल से लैस करें। आप अपनी अवलोकन क्षमता, कल्पना शक्ति और विश्लेषण क्षमता के बेहतर इस्तेमाल से यह दक्षता हासिल कर सकते हैं।

विचार, विषय या आइडिया की खोज के लिए सबसे पहले जरूरी है कि आप जिस अखबार या पत्रिका के लिए फीचर लिखना चाहते हैं, उसमें छपने वाले फीचरों को कुछ समय तक ध्यान से देखें और पढ़ें। उसके अलावा अन्य अखबारों या पत्रिकाओं में छपने वाले फीचरों को भी पढ़ें। इससे न सिर्फ यह अंदाजा लगेगा कि किस तरह के विषयों पर फीचर लिखा जा सकता है, बल्कि आप फीचर लिखने और उसकी प्रस्तुति के तरीके को भी समझ सकेंगे। याद रखिए कि हर अखबार या पत्रिका का अपना अलग कलेवर और चरित्र होता है और वे उसी के अनुरूप फीचर प्रकाशित भी करते हैं। किसी भी नए या फ्रीलांस फीचर लेखक के लिए इसे समझना बहुत जरूरी है।

फीचर के लिए विषय या आइडिया पर सोचते हुए कुछ बातों का ध्यान जरूर रखना चाहिए। विषय न सिर्फ समसामयिक होना चाहिए, बल्कि उसमें नयापन होना चाहिए। जैसे होली या महिला दिवस फीचर लिखने का विषय हो सकते हैं, लेकिन आपको किसी नए पहलू की तलाश करनी होगी क्योंकि इस विषय पर अखबारों/पत्रिकाओं में लगभग हर साल फीचर छपते हैं। दूसरे, यह देखना होगा कि वह विषय पाठकों के लिए कितना उपयोगी या प्रासंगिक है और उसमें क्या कोई नयी बात जुड़ी है। विषय या आइडिया पर विचार करते हुए यह जरूर सोचिए कि क्या वह विषय पाठकों को पसंद आएगा, क्या वे उसे पढ़ना चाहेंगे। इसकी जांच अपने कुछ मित्रों और परिचितों से उस विषय पर उनकी राय पूछकर कर सकते हैं। अगर वह विषय उन्हें पसंद आता है। तो अधिकांश पाठकों को भी वह पसंद आएगा।

5.2.2 शोध

एक अच्छे, सूचनाप्रद और उपयोगी फीचर के लिए जरूरी सूचनाएं और तथ्य जुटाने के लिए शोध जरूरी है। लेकिन शोध से क्या आशय है ? शोध एक प्रविधि है जिसके जरिए सूचनाओं और तथ्यों को इकट्‌ठा किया जाता है, उनकी जांच–पड़ताल की जाती है, उनका विश्लेषण किया जाता है और निष्कर्ष निकाला जाता है। इसके लिए विभिन्न तरीकों का इस्तेमाल किया जाता है। लेकिन समाचार पत्रों और पत्रिकाओं के लिए किए जाने वाले शोध में पी.एचडी. के लिए किए जाने वाले व्यापक, गहन और विस्तृत शोध की आवश्यकता नहीं होती। उनके लिए शोध का मुख्य उद्‌देश्य समाचार, लेख या फीचर के लिए आवश्यक सामग्री जुटाना और सामग्री की जांच–पड़ताल करना होता है। चूंकि अखबारों या पत्रिकाओं में छपने वाले फीचर की शब्द संख्या 1000 शब्दों से लेकर 2000 शब्दों तक निर्धारित होती है, इसलिए शोध के जरिए सामग्री जुटाने का दायरा भी सीमित होता है।

दरअसल, किसी भी अखबार या पत्रिका का मुख्य काम सही, तथ्यपूर्ण और शुद्ध सूचनाएं उपलब्ध कराना होता है। लेकिन सही और शुद्ध सूचनाएं जुटाने का एक ही

तरीका है – शोध। शोध के तहत इंटरव्यू के जरिए या पूर्व–प्रकाशित सामग्री के अध्ययन या स्वयं अवलोकन के माध्यम से सामग्री की इकट्ठा की जाती है। लेकिन सफल शोध के लिए जरूरी है कि शोध का उद्देश्य या लक्ष्य स्पष्ट हो। इसका अर्थ यह हुआ कि फीचर लेखक को स्पष्ट होना चाहिए कि वह शोध से क्या निकालना चाहता है। इसके मुताबिक ही शोध की योजना बनानी चाहिए।

योजना बनाकर शोध करने से न सिर्फ समय और साधन की बचत होती है, बल्कि उपयुक्त सामग्री जुटाने में भी आसानी होती है। योजना के तहत फीचर की सामग्री के प्रमुख स्रोतों को निश्चित करना और उन स्रोतों से सामग्री जुटाने की समय सारणी तय करना प्रमुख है। शोध के जरिए सामग्री जुटाने के कई प्रमुख स्रोत हैं : पुस्तकालय, समाचार पत्रों/पत्रिकाओं की क्लिपिंग, विश्वकोष, संदर्भ ग्रंथ, सरकारी/गैर सरकारी रिपोर्टें, इंटरनेट, प्रत्यक्षदर्शियों और विशेषज्ञों से इंटरव्यू, स्वयं अवलोकन, यात्रा आदि। शोध के दौरान अपने उद्देश्य और योजना से मत भटकिए अन्यथा आप न सिर्फ सही तथ्य नहीं जुटा पाएंगे, बल्कि ढेर सारी गैर–जरूरी सामग्री बटोर लेंगे और अपना काम मुश्किल कर लेंगे।

5.2.3 सामग्री संग्रह

फीचर लेखन की प्रक्रिया में सर्वाधिक समय सामग्री जुटाने में ही लगता है। किसी नए लेखक के लिए सबसे कठिन काम अपने फीचर के लिए उपयुक्त सामग्री जुटाना होता है। एक तो उसे पता नहीं होता है कि संबंधित विषय पर सामग्री कहां मिलेगी और जब सामग्री का स्रोत पता चल जाए तो वहां से प्रासंगिक सामग्री कैसे छांटी जाए। सामग्री के स्रोत पता करने के कई तरीके हैं– जैसे जहां से आइडिया या विषय चुना गया है, वहां से भी सामग्री के कुछ स्रोतों का पता चल सकता है। दूसरे, अपने मित्रों, सहकर्मियों और उस विषय के विशेषज्ञों से भी स्रोतों की जानकारी मिल सकती है। और तीसरे, इंटरनेट पर याहू और गूगल जैसे सर्च इंजनों से भी काफी सामग्री मिल सकती है। लेकिन इंटरनेट के इस्तेमाल में सावधानी और सतर्कता जरूरी है क्योंकि वहां इतनी सामग्री है कि उसे छांटना मुश्किल होता है और दूसरे, सामग्री की विश्वसनीयता की भी जांच जरूरी है। असल में इंटरनेट पर उपलब्ध सारी सामग्री विश्वसनीय और तथ्यपूर्ण नहीं होती है, वह अक्सर असंपादित होती है।

सामग्री संकलन के दौरान फीचर लेखक को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि उसे अपने फीचर की मांग के अनुरूप सामग्री जुटानी है, न कि जो भी मिला, सब बटोरते जाना है। सामग्री की बहुलता बाद में लेखन के दौरान मुश्किल खड़ी कर देती है। क्योंकि उसे छांटने, समेटने और सजाने में काफी उर्जा जाया होती है। दूसरे, सामग्री संकलन की प्रक्रिया के दौरान ही प्रासंगिक सामग्री को छांटकर अलग करते रहना चाहिए अन्यथा आखिर में ढेर सारी सामग्री के बीच प्रासंगिक सामग्री को ढूंढना मुश्किल होता है। तीसरे, संकलित सामग्री की जांच–पड़ताल करते हुए नएपन, सामयिकता, रोचकता, शुद्धता, प्रासंगिकता और विविधता जैसे तत्वों को महत्व देना चाहिए। सामग्री संकलन के दौरान हमेशा ऐसे तथ्यों और सूचनाओं की तलाश करिए जो उस फीचर को विशिष्ट बना सकें।

सामग्री संकलन के दौरान किसी सूचना विशेष के आधार पर तुरंत किसी नतीजे पर पहुंचने की जल्दबाजी से भी बचना चाहिए। कोई सूचना या तथ्य किसी अन्य सूचना या तथ्य से मिलकर बिल्कुल अलग या नए नतीजे की ओर ले जा सकते हैं। इसलिए

सामग्री संकलन का अर्थ सिर्फ सामग्री बटोरना नहीं, बल्कि सामग्री की बारीकी से जांच–पड़ताल करना भी है।

5.2.4 साक्षात्कार और यात्रा

सामग्री संकलन की प्रक्रिया में लिखित स्रोतों के अलावा विषय से संबंधित लोगों के साक्षात्कार (इंटरव्यू) और संबंधित जगहों की यात्रा भी बहुत महत्वपूर्ण है। दरअसल, फीचर की मूल प्रकृति को ध्यान में रखें तो एक रोचक और सूचनाप्रद फीचर के लिए लिखित स्रोतों से मिली सामग्री, सूचना और तथ्य आदि की तुलना में फीचर के चरित्रों के साक्षात्कार और संबंधित स्थानों के जीवंत ब्यौरे ज्यादा महत्व रखते हैं। वही फीचर की जान होते हैं। इसलिए फीचर की सामग्री जुटाते हुए साक्षात्कार और यात्रा को न सिर्फ सर्वाधिक महत्व देना चाहिए बल्कि उसके लिए खूब तैयारी भी करना चाहिए। इस तैयारी में सबसे महत्वपूर्ण है फीचर के विषय के अनुरूप ऐसे लोगों की तलाश और साक्षात्कार लिया जा सके और उन जगहों का चयन जिनकी यात्रा की जा सके।

सच तो यह है कि अगर आपने साक्षात्कार के लिए उपयुक्त लोग और यात्रा के लिए सही स्थान खोज निकाले हैं तो आपकी आधी समस्या हल हो जाएगी। इसलिए फीचर के विषय अनुरूप साक्षात्कारदाताओं और उपयुक्त स्थानों की तलाश पर गंभीरता से सोच–विचार जरूरी है। ऐसे साक्षात्कारदाता को खोजिए जो न सिर्फ उस विषय पर बोलने का अधिकारी हो, बल्कि जो खुलकर बात करने के लिए भी तैयार हो। ऐसे व्यक्तियों को तलाशिए जिनका व्यक्तित्व आकर्षक, दिलचस्प और कुछ अलग हो। दरअसल, साक्षात्कारदाता आपके फीचर के वे चरित्र हैं जिनके जरिए कहानी (स्टोरी) कही जाती है। इसलिए आपके साक्षात्कारदाताओं के व्यक्तित्व में विविधता होनी चाहिए।

साक्षात्कारदाताओं के चयन के बाद इंटरव्यू की पूर्व–तैयारी भी महत्वपूर्ण है। आप साक्षात्कारदाता से क्या जानना चाहते हैं, उससे क्या निकालना चाहते हैं, यह स्पष्ट होना चाहिए। इसके अनुरूप ही प्रश्न तैयार करने चाहिए। साक्षात्कार के लिए समय तय करने के साथ ही आपको साक्षात्कारदाता के व्यक्तित्व, पृष्ठभूमि, कार्यों और उपलब्धियों के बारे में जितना संभव हो, जानकारी इकट्ठी कर लेनी चाहिए। साक्षात्कार टेप पर हो तो बेहतर है लेकिन टेप के बावजूद आपको नोट्स लेते रहना चाहिए। अगर संदेह हो तो साक्षात्कारदाता के सही नाम, पदनाम और कंपनी/संगठन के बारे में जरूर पूछ लीजिए। साक्षात्कार खत्म होने के बाद उनका फोन नम्बर और ई–मेल अवश्य ले लीजिए ताकि अगर फीचर तैयार करते हुए कोई बात पूछनी हो या किसी स्पष्टीकरण की जरूरत हो तो तत्काल संपर्क किया जा सके।

इसी तरह से फीचर के विषय से संबंधित किसी स्थान की यात्रा करनी हो तो बिल्कुल हिचकिचाना नहीं चाहिए। उन स्थानों का खुद अवलोकन करने से आप अपने फीचर में वे आंखों देखे ब्यौरे डाल सकेंगे जो फीचर को जीवंत बना देते हैं। लेकिन साक्षात्कारदाता की तरह स्थानों का चुनाव भी काफी सोच–विचार करके करना चाहिए। दूसरे, चुनी हुई जगह की यात्रा के दौरान उसके जाने–पहचाने पहलुओं के अलावा अनजाने–अनछुए पहलुओं को खोजने, देखने और समझने की भी कोशिश कीजिए। यात्रा के दौरान घूमते हुए बारीक से बारीक ब्यौरे को नोटबुक में दर्ज करते जाइए। जरूरत पड़े तो स्थानीय लोगों और अधिकारियों से भी बात कीजिए। इससे उस जगह को समझने में मदद मिलेगी। याद रखिए, कई बार आपकी आंखें भी धोखा

खा सकती हैं, इसलिए स्थानीय लोगों और अधिकारियों से बातचीत करने में हिचकिचाना नहीं चाहिए।

5.2.5 फोटो, रेखांकन और ग्राफिक्स

एक अच्छे और रोचक फीचर की फोटो, रेखांकन और ग्राफिक्स के बिना कल्पना नहीं की जा सकती। फीचर को फीचर फोटो, रेखांकन और ग्राफिक्स ही बनाते हैं। इसलिए आज के फीचर लेखक से यह भी अपेक्षा की जाती है कि वह फीचर के विषय से संबंधित उपयुक्त फोटो खींचने या तलाशने में फोटोग्राफर की मदद करेगा। समाचारपत्र या पत्रिका के कला विभाग से फीचर को आकर्षक, रोचक और पठनीय बनाने के लिए उपयुक्त रेखांकन और ग्राफिक्स तैयार करने में सहयोग लेना जरूरी है। दरअसल, एक अच्छा फीचर एक पैकेज है जिसमें लिखित अन्तर्वस्तु के अलावा फोटो, रेखांकन और ग्राफिक्स शामिल हैं। इसलिए फीचर लेखक के दिमाग में यह शुरू से ही स्पष्ट होना चाहिए कि फीचर के साथ कितने और कैसे फोटो दिए जाएंगे, रेखांकन और ग्राफिक्स का इस्तेमाल कैसे और कहां किया जाएगा।

बड़े समाचार पत्रों/पत्रिकाओं में तो पूरा कला विभाग और फोटो विभाग होता है जो – संपादक/प्रभारी और फीचर लेखक से सलाह करके फीचर के साथ दिए जाने वाले फोटो, रेखांकन और ग्राफिक्स की योजना बनाता है। योजना के अनुसार फोटोग्राफर फीचर लेखक के साथ जाकर या उसके सुझाव के मुताबिक फोटो खींचकर लाता है। लेकिन छोटे और मध्यम स्तर के अखबारों/पत्रिकाओं में प्रायः फीचर लेखक को ही फोटोग्राफर की भी भूमिका अदा करनी पड़ती है। एक फ्रीलांस लेखक अगर अपने फीचर के साथ कुछ अच्छे फोटो भी भेजता है तो उसके छपने की संभावना बढ़ जाती है। तात्पर्य यह कि एक अच्छे फीचर लेखक को एक अच्छा फोटाग्राफर बनने की भी कोशिश करनी चाहिए। फीचर के लिए सामग्री संकलन के दौरान आप जिन जगहों की यात्रा करते हैं और जिन लोगों के इंटरव्यू करते हैं, उनके फोटो जरूर लीजिए। कोशिश कीजिए कि फोटो में गति, ऊर्जा और जीवंतता हो।

जहां फोटो उपलब्ध न हों, वहां रेखांकन से उस कमी को पूरा करने की कोशिश की जाती है। कई बार फीचर में विविधता लाने के लिए भी रेखांकन का इस्तेमाल किया जाता है। हालांकि फीचर लेखक के लिए रेखांकन में माहिर होना संभव नहीं है लेकिन वह कलाकार को रेखांकन के विषय में सुझाव दे सकता है।

इसी तरह ग्राफिक्स का इस्तेमाल भी हाल के दिनों में बढ़ा है। आमतौर पर फीचर में ग्राफिक्स का उपयोग सूचनाओं और आंकड़ों को प्रस्तुत करने के लिए किया जाता है। जटिल आंकड़े और तथ्य अगर ग्राफिक्स के रूप में प्रस्तुत किए जाएं तो वे न सिर्फ फीचर को आकर्षक और रोचक बना देते हैं, बल्कि उन्हें समझना भी बहुत आसान हो जाता है। फीचर की कॉपी में आंकड़ों के इस्तेमाल से उसके प्रवाह में बाधा पड़ती है, इसलिए आंकड़ों को ग्राफिक्स में देने पर जोर बढ़ रहा है। एक फीचर लेखक के बतौर आपको इस पर गंभीरता से सोचना चाहिए कि कौन से तथ्य या आंकड़े फीचर के लिए महत्वपूर्ण हैं और उन्हें ग्राफिक्स के रूप में कैसे दिया जा सकता है।

5.2.6 आलेख की योजना और प्रस्तुति

शोध, साक्षात्कार और यात्रा के जरिए फीचर के लिए सामग्री जुटाने के बाद लिखना शुरू करने से पहले आलेख की योजना और प्रस्तुति पर बारीकी से विचार करना चाहिए। एक तरह से यह लिखना शुरू करने से पहले पूरे आलेख में क्या होगा, किस क्रम में होगा और किस तरह से प्रस्तुत किया जाएगा, इसका एक पूरा खाका तैयार करना है। दिमाग में खाका तैयार रहने पर लिखना आसान हो जाता है।

लेकिन खाका तैयार करते हुए सबसे पहले उस 'ब्रीफ' या निर्देश को याद करना चाहिए जो फीचर संपादक/प्रभारी से विषय तय करते हुए आपको मिला था। विषय पर विचार–विमर्श के दौरान फीचर संपादक/प्रभारी फीचर लेखक को बताता है कि वह फीचर में क्या–क्या चाहता है, फीचर का एंगल क्या होना चाहिए और फीचर को किन–किन मुद्दों या पहलुओं पर फोकस करना चाहिए। वह यह भी बताता है कि इस फीचर में किन–किन लोगों के इंटरव्यू होने चाहिए। साथ ही यह भी कि फीचर कितने शब्दों का होना चाहिए या कितनी जगह दी जाएगी। इसे 'ब्रीफ' कहते हैं। आमतौर पर फीचर लेखक को इस 'ब्रीफ' का उल्लंघन नहीं करना चाहिए अन्यथा प्रकाशन में समस्या आ सकती है।

इसलिए फीचर का खाका बनाते हुए उपलब्ध सामग्री पर गौर कीजिए और सुनिश्चित कीजिए कि 'ब्रीफ' के अनुसार आपने सारी सामग्री जुटा ली है। अगर कोई कमी हो तो देखिए कि क्या वह सामग्री भी जुटाई जा सकती है अन्यथा उसके विकल्प पर विचार कीजिए। अगर आपको लगता है कि वह सामग्री बहुत महत्वपूर्ण नहीं है तो आप उसे छोड़ भी सकते हैं। जब सारी सामग्री जुट जाए तो कल्पना कीजिए कि अखबार या पत्रिका में जितनी और जो जगह आपको दी गयी है, उसपर फीचर किस तरह से प्रस्तुत किया जा सकता है। फीचर कितने शब्दों का होगा, उसके साथ कितनी तस्वीरें होंगी, रेखांकन और ग्राफिक्स की जगह कहां होगी और क्या बॉक्स में अलग से एक या दो इंटरव्यू भी दिए जा सकते हैं। इन सब पर विचार करते हुए यह भी सोचिए कि इन सभी को एक–दूसरे का पूरक कैसे बनाया जाए। बड़े फीचर में कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं पर फोकस करने के लिए अलग से दो–तीन बाक्स भी तैयार किए जाते है।

कुल मिलाकर, फीचर की योजना और प्रस्तुति का खाका तैयार करते हुए यह ध्यान रखना चाहिए कि इसका उद्देश्य फीचर को पठनीय, रोचक और आकर्षक बनाना है। पैकेजिंग पर जोर देने का अर्थ यह नहीं कि फीचर को उलझाऊ, अनावश्यक भीड़–भाड़ भरा और अपठनीय बना दिया जाए।

बोध प्रश्न–1

1) नीचे कुछ वाक्य दिए जा रहे हैं। फीचर लेखन के नियमों को ध्यान में रखकर इनकी पांच–पांच पंक्तियों में व्याख्या कीजिए।

   क) फीचर के विषय चयन में फीचर संपादक की अहम भूमिका होती है।

   ....

   ....

   ....

ख) फीचर का आइडिया तलाशने के लिए आपको स्वयं को प्रशिक्षित करना पड़ता है।

....

....

....

ग) शोध योजना बनाकर करना चाहिए।

....

....

....

घ) साक्षात्कार के पहले पर्याप्त तैयार जरूरी है।

....

....

....

5.3 फीचर लेखन की प्रक्रिया

फीचर लेखन समाचार लेखन से कई मायनों में भिन्न होता है। समाचार लेखन का एक निश्चित ढांचा होता है जबकि फीचर लेखन का कोई निश्चित ढांचा या फार्मूला नहीं होता। हर फीचर लेखक की अपनी शैली होती है और उसे पूरी आजादी होती है कि वह अपनी शैली में फीचर लिखे। शर्त सिर्फ यह है कि वह कुल मिलाकर दिलचस्प, पठनीय और अखबार/पत्रिका की शैली के अनुरूप हो। इसके बावजूद फीचर में कुछ खास तत्वों की अपेक्षा की जाती है जो उसे दिलचस्प और पठनीय बनाते हैं– जैसे, ड्रामा, जीवंतता, ऊर्जा, फीचर के चरित्र, वातावरण का चित्रण, उद्धरण, यादगार लम्हे, सूचनाएं/तथ्य, चित्रात्मक विवरण और आकर्षक भाषा। इन तत्वों को आपस में गूंथकर ही अच्छा फीचर तैयार होता है।

फीचर लेखक को यह भी ध्यान रखना चाहिए कि वह किस समाचार पत्र/पत्रिका के लिए लिख रहा है, उसकी फीचर शैली क्या है, फीचर का विषय किस तरह का है और उस फीचर का लक्षित पाठक वर्ग कौन है। जाहिर है कि अखबारों/पत्रिकाओं के लिए फीचर लेखन कोई 'स्वान्तः सुखाय' लेखन नहीं है और फीचर लेखक को इसका खयाल रखना चाहिए। अगर आप एक ऐसे अखबार/पत्रिका के लिए लिख रहे हैं जो हल्के–फुल्के और चटपटे फीचर छापता है तो आपके फीचर की विषय–शैली उसी के अनुरूप होनी चाहिए। लेकिन अगर आप एक ऐसे अखबार/पत्रिका के लिए फीचर कर रहे हैं जिसकी ख्याति गंभीर और सौम्य किस्म के फीचर छापने की है तो आपको भी अपनी शैली उसी के अनुरूप ढालनी होगी। उदाहरण के लिए, 'जनसत्ता' में गंभीर और सौम्य फीचर छपते हैं जबकि 'हिंदुस्तान', 'नवभारत टाइम्स', 'दैनिक भास्कर, अमर उजाला जैसे अखबार हल्के–फुल्के फीचर छापते हैं। 'राष्ट्रीय सहारा' और 'सहारा समय' में दोनों तरह के फीचर देखे जा सकते हैं।

5.3.1 प्रारंभ

फीचर का प्रारंभ बहुत महत्वपूर्ण होता है। हालांकि फीचर का प्रारंभ उसके मध्य और अंत के साथ जुड़ा होता है और फीचर को हमेशा उसकी समग्रता में देखना चाहिए लेकिन कहते हैं शुरूआत अच्छी हो जाए तो मध्य और अंत भी बेहतर होने की बढ़ जाती है। फीचर का प्रारंभ इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि पाठक सबसे पहले पढ़ता है और अगर उसे प्रारंभ दिलचस्प और पठनीय लगता है तो वह पूरा फीचर पढ़ सकता है! लेकिन अगर शुरुआत अच्छा नहीं है तो पाठक उस फीचर से मुंह मोड़ सकता है, भले ही फीचर का मध्य और अंत बहुत आकर्षक हो।

दूसरे, फीचर का प्रारंभ ही पूरे फीचर का टोन सेट करता है। इसलिए फीचर के प्रारंभ पर पर्याप्त मेहनत करनी चाहिए। हालांकि प्रारंभ को अच्छा, दिलचस्प और आकर्षक बनाने का लेखक पर काफी दबाव होता है लेकिन अगर पर्याप्त तैयारी के साथ शुरू करें तो फीचर का प्रारंभ थोड़ी सी मेहनत से अच्छा बन सकता है। फीचर को शुरू करने का कोई फार्मूला तो नहीं है लेकिन कुछ संकेत हैं जिनके इस्तेमाल से काम आसान हो सकता है।

सबसे पहली बात तो यह है कि फीचर के प्रारंभ को उसकी पूरी समग्रता में सोचिए। फीचर शुरू करने से पहले पूरे फीचर यानी प्रारंभ, मध्य और अंत की योजना बनाना जरूरी है। फीचर में क्या होगा और किस क्रम में होगा–बिंदुवार यह एक पृष्ठ पर लिख लीजिए। आप चाहें तो इसमें से किसी भी एक दिलचस्प बिंदु से फीचर शुरू करके वृत्ताकार घूमते हुए वापस वहीं लौटकर फीचर समाप्त कर सकते हैं। यह तरीका बहुत कारगर रहता है लेकिन इसकी सफलता बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करती है कि आपने फीचर के महत्वपूर्ण बिंदुओं का क्रम कितने तार्किक तरीके से सजाया है।

चूंकि फीचर की कोई गलत या सही शुरूआत नहीं होती है, इसलिए फीचर शुरू करने के मामले में आप प्रयोग कर सकते हैं। प्रयोग बहुत कुछ फीचर के विषय की प्रकृति पर निर्भर करता है। जैसे अगर आप एक व्यक्तिपरक (प्रोफाइल) फीचर लिख रहे हैं तो उसकी शुरूआत आप उस व्यक्ति की पिछली जिंदगी के ऐसे किसी वाकये से कर सकते हैं जिसने उसके जीवन की दिशा बदल दी हो। अगर आप किसी हवाई, रेल या बस दुर्घटना के बारे में मानवीय रुचि का फीचर लिख रहे हैं अथवा किसी प्राकृतिक हादसे जैसे भूकंप, चक्रवात, सुनामी या बाढ़ पर, तो आप फीचर की शुरूआत हादसे के शिकार किसी व्यक्ति या परिवार की व्यक्तिगत कहानी से कर सकते हैं या फिर दुर्घटना स्थल अथवा हादसे के कहर के जीवंत ब्यौरे से कर सकते हैं।

5.3.2 फीचर का ढांचा

फीचर लिखते हुए पूरे फीचर का ढांचा स्पष्ट होना चाहिए। इससे फीचर को शुरू से आखिर तक बांधे रखने और पाठक की दिलचस्पी बनाए रखने में मदद मिलती है। फीचर के ढांचे का अर्थ यह है कि लेखक को पता होना चाहिए कि अगर वह 1000 शब्दों का फीचर लिख रहा है तो उसकी मुख्य थीम या एंगल क्या होगा, उसमें और क्या–क्या बातें होंगी और उन्हें पैराग्राफ–दर–पैराग्राफ मोतियों की तरह माला में कैसे गुंथा जाएगा। शुरूआत के बाद फीचर को आगे बढ़ाने के लिए यह स्पष्टता बहुत जरूरी है।

जैसे, अगर आपने एक सफल क्रिकेट खिलाड़ी का प्रोफाइल उसके क्रिकेट कैरियर के फ्लैशबैक से किया है, जब वह चोट के कारण टीम से बाहर हो गया था और लगा कि उसका क्रिकेट जीवन समाप्त हो जायेगा, लेकिन अपनी दृढ़ता और संकल्प शक्ति से वह टीम में कैसे वापस लौटा। इस शुरूआत के बाद आप फिर वर्तमान में लौटते हैं और उसकी उपलब्धियों को बताते हैं। लेकिन फिर पीछे लौटते हैं जब हम उसके स्कूली जीवन की शरारतों और क्रिकेट के प्रति जुनून की कहानियां सुनाते हैं। फिर वापस वर्तमान में लौटते हैं– यह बताने के लिए कैसे वह जुनून आज भी बरकरार है। फिर उसके आगे के जीवन को लेकर उस खिलाड़ी की योजनाओं के बारे में बताते हैं। बीच–बीच में हम उसके साथी खिलाड़ियों, मित्रों, परिवार के सदस्यों से लिए गए इंटरव्यू के आधार पर उद्धरण डालते चलते हैं !

इस तरह पूरे फीचर का ढांचा लेखक के दिमाग में स्पष्ट रहता है। इसमें ध्यान रखने की बात सिर्फ यह है कि फीचर के केंद्रीय थीम से न भटकें और न ही एक ही साथ कई थीम पेश करने की कोशिश करें। इससे फीचर का फोकस गड़बड़ाने लगता हैऔर पाठक को उलझन होने लगती है।

5.3.3 फीचर का विकास : गति और प्रवाह

फीचर शुरू से आखिर तक पाठकों को बांधे रख सके, इसके लिए उसमें प्रवाह और गति बनी रहनी चाहिए। कहने का तात्पर्य यह है कि एक पैराग्राफ से दूसरे पैराग्राफ की ओर बढ़ते हुए पाठक को झटका न लगे, प्रवाह सहज बना रहे और कहानी भी आगे बढ़ती रहे। अगर पाठक एक पैराग्राफ से दूसरे पैराग्राफ तक जाने के दौरान उलझन में पड़ जाए और कथावस्तु को समझने के लिए उसे फीचर के पहले के पैराग्राफों को फिर से पढ़ना पड़े या पैराग्राफ से गुजरते हुए रुककर कोई पहले पढ़ी बात से उसका संबंध जोड़ने के लिए दिमागी कसरत करनी पड़े तो समझ लीजिए कि फीचर ठीक से आगे नहीं बढ़ रहा है।

फीचर में गति और प्रवाह बनाए रखने की कुंजी पैराग्राफों को एक–दूसरे से गूंथने की कला में निहित है। इसका आसान तरीका यह है कि पैराग्राफ छोटे–छोटे हों और हर पैराग्राफ में मुख्य थीम से जुड़ी कोई एक सहायक थीम को उठाया जाए। जैसे एक मकान बनाते हुए राजमिस्त्री ईंट–दर–ईंट रखते हुए चलता है और उन ईंटों को आपस में जोड़ने के लिए गारे का इस्तेमाल करता है, उसी तरह पैराग्राफों को एक–दूसरे से जोड़ने के लिए भाषा में ऐसे कई शब्द हैं जो उन्हें आपस में सहजता से जोड़ देते हैं। जैसे– इस बीच, उधर, इधर, दूसरी ओर, लेकिन, दरअसल, हालांकि, फिर भी, इस तरह आदि।

इस तरह हर पैराग्राफ को एक सहायक थीम या विषय पर केंद्रित करते हुए उन्हें आपस में जोड़ दिया जाए तो न सिर्फ कथानक आगे बढ़ता है, बल्कि सहज प्रवाह भी बना रहता है।

5.3.4 उद्धरण

फीचर में गति और प्रवाह के जरिए पाठकों की दिलचस्पी बनाए रखने और साथ ही उसमें रंग भरने के लिए फीचर के चरित्रों/पात्रों के उद्धरणों का इस्तेमाल किया जाता है। बिना उद्धरण के फीचर निर्जीव और उबाऊ हो जाते हैं। अगर फीचर में कई पात्र हैं तो फीचर लेखक को उनके इंटरव्यू से मिले ऐसे उद्धरण फीचर में जरूर डालने

चाहिए जो उसके व्यक्तित्व पर रोशनी डालते हों या उसकी सोच को जाहिर करते हों। ऐसे सीधे उद्धरणों से फीचर की गति में विभिन्नता बनी रहती है और ऐसा लगता है जैसे पाठक खुद उस पात्र से रूबरू है। उद्धरणों से फीचर में ऊर्जा भर जाती है।

लेकिन उद्धरणों खासकर सीधे या प्रत्यक्ष उद्धरण का इस्तेमाल खूब सोच–समझकर करना चाहिए। फीचर को गैरजरूरी उद्धरणों से भरने से बचना चाहिए। खासकर लंबे और उबाऊ सूचनात्मक उद्धरण फीचर के प्रवाह में बाधा डालते हैं। सीधे उद्धरण के लिए आपको किसी दिलचस्प, उत्तेजक, अलग किस्म के, भावुक, अनपेक्षित, विवादास्पद टकरावपूर्ण या मजाकिया बयानों को चुनना चाहिए। ऐसे बयानों को उद्धरण के रूप में देने का उद्देश्य पाठक को उस पात्र के व्यक्तित्व, उसके विचारों और उसके अंदाजे–बयां से परिचित कराना है।

इसके साथ ही उद्धरण को प्रस्तुत करते हुए सावधानी रखनी चाहिए। सीधे उद्धरण इस्तेमाल करने से पहले एक पंक्ति में उस व्यक्ति का पूरा नाम, पदनाम और वह संदर्भ या परिप्रेक्ष्य जरूर बताना चाहिए जिसमें उस व्यक्ति ने वह बात कही है। कई बार सीधे या प्रत्यक्ष उद्धरण से पहले अप्रत्यक्ष कथन देने से भी लंबा उद्धरण नहीं देना पड़ता और पाठक को भी प्रत्यक्ष उद्धरण को समझने में कोई दिक्कत नहीं होती। इसके अलावा अगर आप फीचर में कई लोगों के प्रत्यक्ष उद्धरणों का इस्तेमाल कर रहे हों तो थोड़ी अतिरिक्त सावधानी बरतिए। कई फीचर लेखक प्रत्यक्ष उद्धरणों को इस तरह से पूरे फीचर में जगह–जगह डाल देते हैं कि पाठक भ्रमित हो जाता है कि वह किसका उद्धरण पढ़ रहा है। विभिन्न लोगों के उद्धरण एक–दूसरे में घुलमिल न जाएं, इसका ध्यान रखना बहुत जरूरी है।

5.3.5 फीचर की भाषा

समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में फीचर को उसकी भाषा और शैली के कारण अलग से पहचाना जाता है। फीचर का जादू बहुत हद तक भाषा के जरिए अभिव्यक्त होता है। फीचर की भाषा आम बोलचाल की भाषा होती है लेकिन वह थोड़ी नरम, मन को छूनेवाली और आम समाचारों की भाषा से कुछ अलग होती है।

फीचर लिखते हुए सरल भाषा का प्रयोग कीजिए। सरल भाषा का अर्थ यह है कि शब्दों के चुनाव में सटीक और वाक्य संरचना में स्पष्ट रहिए। इसका सबसे आसान उपाय यह है कि छोटे और सरल वाक्य लिखिए। छोटे वाक्यों में गजब की नाटकीयता होती है। बहुत बहाव होता है। वे पाठकों को सहज लगते हैं। उन्हें समझना आसान होता है। अगर आप छोटे वाक्यों का इस्तेमाल करते हैं तो गलती की संभावना भी बहुत कम हो जाती है।

कुछ लोग फीचर को आकर्षक बनाने के लिए कठिन शब्दों या विशेषणों या अनुप्रास और अलंकारिक भाषा का खूब इस्तेमाल करते हैं। लेकिन ऐसी भाषा कथ्य पर इतनी हावी हो जाती है कि विषय पीछे छूट जाता है, अर्थ का अनर्थ होने लगता है और वाक्य संरचना बोझिल होने लगती है। पाठक भ्रमित होने लगता है और उसके लिए खुद को फीचर में केन्द्रित कर पाना मुश्किल होने लगता है। साफ है कि ऐसी भाषा से बचना चाहिए।

5.4 फीचर लेखन में ध्यान रखने योग्य बातें

फीचर लिखते हुए अगर आप निम्नलिखित बिंदुओं का ध्यान रखें तो आप फीचर लिखने में धीरे–धीरे माहिर हो सकते हैं :

1) फीचर में 'मैं' के इस्तेमाल से बचिए। फीचर में लेखक को पृष्ठभूमि में रहना

   चाहिए।

2) विराम चिन्हों का इस्तेमाल सावधानी और समझदारी से कीजिए। सीधे उद्धरण के लिए उद्धरण चिन्हों का उपयोग कैसे किया जाए या कहां अल्पविराम लगेगा और कब पूर्ण विराम, इसका ध्यान रखिए।

3) समाचारपत्र या पत्रिका की शैली पुस्तिका – अगर कोई है – तो उसके निर्देशों का पालन जरूर कीजिए।

4) एक बार लिखने के बाद पूरा फीचर दोबारा पढ़िए और तथ्यों, वर्तनी और भाषा संबंधी अशुद्धियों को दूर कीजिए । भाषा को कसिए और फालतू शब्द निकाल दीजिए।

5) यह भी देखिए कि क्या फीचर में सभी महत्वपूर्ण बातें आ गयी हैं या कुछ जरूरी चीजें छूट गयी हैं। उपयुक्त संशोधन कीजिए।

6) यह भी सुनिश्चित कीजिए कि फीचर संपादक के 'ब्रीफ' के अनुसार ही हो अन्यथा उसके छपने की संभावना कम हो सकती है।

7) फीचर को दिलचस्प और प्रभावी बनाने के लिए उसमें एक–दो 'जीवन की झांकी' (एनेक्डोट) भी डालिए। 'जीवन की झांकी' से तात्पर्य फीचर के मुख्य पात्र के जीवन की किसी यादगार घटना से है जिसने उस पर गहरा प्रभाव डाला हो। लेकिन एक फीचर में एक या अधिक से अधिक दो 'जीवन की झांकी' का प्रयोग कीजिए।

बोध प्रश्न 2

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1) फीचर लेखन के नियमों के अनुसार इनकी व्याख्या कीजिए।

   क) उद्धरणों के बिना फीचर नीरस और निर्जीव लगने लगता है।

   ....

   ....

   ....

   ख) फीचर को उसकी भाषा से पहचाना जाता है।

   ....

   ....

   ....

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

5.5 सारांश

- अगर आप फीचर के लिए नए आइडिया खोजने में माहिर हो जाये तो समझिए कि फीचर लेखन की एक तिहाई मशक्कत कम हो गयी। आपके चारों ओर फीचर के आइडिया बिखरे होते हैं। जरूरत सिर्फ इस बात की है कि आप अपने को उन्हें खोजने और विकसित करने के कौशल से लैस करें। विषय या आइडिया की खोज के लिए सबसे पहले जरूरी है कि आप जिस अखबार या पत्रिका के लिए फीचर लिखना चाहते हैं, उसमें छपने वाले फीचरों को कुछ महीनों तक ध्यान से देखिए और पढ़िए ।

- विषय या आइडिया न सिर्फ समसामयिक होना चाहिए, बल्कि उसमें नयापन भी होना चाहिए। दूसरे यह देखना होगा कि वह विषय पाठकों के लिए कितना उपयोगी या प्रासंगिक है। विषय पर विचार करते हुए यह जरूर सोचिए कि क्या वह विषय पाठकों को पसंद आएगा, क्या वे उसे पढ़ना चाहेंगे।

- शोध एक प्रविधि है जिसके जरिए सूचनाओं और तथ्यों को इकट्ठा किया जाता है। उनकी जांच–पड़ताल की जाती है, विश्लेषण किया जाता है और निष्कर्ष निकाला जाता है। लेकिन समाचार पत्रों और पत्रिकाओं के लिए किए जाने वाले शोध में पी.एचडी. के लिए किए जानेवाले व्यापक, गहन और विस्तृत शोध की आवश्यकता नहीं होती है। इसके लिए शोध का मुख्य उद्देश्य समाचार, लेख या फीचर के लिए आवश्यक सामग्री जुटाना और सामग्री की जांच–पड़ताल करना होता है। शोध के तहत इंटरव्यू के जरिए या पूर्व–प्रकाशित सामग्री के अध्ययन या स्वयं अवलोकन के माध्यम से सामग्री इकट्ठा की जाती है। योजना बनाकर शोध करने से न सिर्फ समय और साधन की बचत होती है, बल्कि उपयुक्त सामग्री जुटाने में भी आसानी होती है।

- फीचर लेखन की प्रक्रिया में सर्वाधिक समय सामग्री जुटाने में लगता है। सामग्री के स्रोत पता करने के कई तरीके हैं– जैसे, जहां से आइडिया या विषय चुना है, वहां से भी सामग्री के कुछ स्रोतों का पता चल सकता है। दूसरे, अपने मित्रों, सहकर्मियों और उस विषय के विशेषज्ञों से भी स्रोतों की जानकारी मिल सकती है। तीसरे, इंटरनेट पर याहू और गूगल जैसे सर्च इंजनों से भी काफी स्रोतों का पता चल सकता है।

- सामग्री संकलन के दौरान फीचर लेखक को हमेशा इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि उसे अपने फीचर की मांग के अनुरूप सामग्री जुटानी है न कि जो भी मिला, सब बटोरते जाना है। सामग्री की बहुलता बाद में लेखन के दौरान मुश्किल खड़ा कर देती है। क्योंकि उसे छांटने, समेटने और सजाने में काफी ऊर्जा जाया होती है।

- सामग्री संकलन के दौरान किसी सूचना विशेष के आधार पर तुरंत किसी नतीजे पर पहुंचने की जल्दबाजी से भी बचना चाहिए। कोई एक सूचना या तथ्य किसी अन्य सूचना या तथ्य से मिलकर बिल्कुल अलग या नए नतीजे की ओर ले जा सकती है।

- सामग्री संकलन की प्रक्रिया के तहत लिखित स्रोतों के अलावा विषय से संबंधित लोगों का साक्षात्कार (इंटरव्यू) और संबंधित जगहों की यात्रा भी महत्वपूर्ण है।

फीचर के लिए सामग्री जुटाते हुए साक्षात्कार और यात्रा को न सिर्फ सर्वाधिक महत्व देना चाहिए, बल्कि उसके लिए खूब तैयारी भी करनी चाहिए। इस तैयारी में सबसे महत्वपूर्ण है, फीचर के विषय के अनुरूप ऐसे लोगों की तलाश, जिनका साक्षात्कार किया जा सके और उन जगहों या स्थानों का चयन, जिनकी यात्रा की जानी चाहिए।

- ऐसे साक्षात्कारदाता को खोजिए जो न सिर्फ उस विषय पर बोलने का अधिकारी हो, बल्कि खुलकर बात करने के लिए भी तैयार हो। ऐसे व्यक्तियों को तलाशिए जिनका व्यक्तित्व आकर्षक, दिलचस्प और कुछ अलग हो।

- एक अच्छे और रोचक फीचर की फोटो, रेखांकन और ग्राफिक्स के बिना कल्पना नहीं की जा सकती है। फीचर को फीचर फोटो, रेखांकन और ग्राफिक्स ही बनाते हैं इसलिए फीचर लेखक से यह भी अपेक्षा की जाती है कि वह फीचर के विषय से संबंधित उपयुक्त फोटो खींचने या तलाशने में फोटोग्राफर की मदद करेगा।

- शोध, साक्षात्कार और यात्रा के जरिए फीचर के लिए सामग्री जुटाने के बाद लिखना शुरू करने से पहले आलेख की योजना और प्रस्तुति पर बारीकी से विचार करना चाहिए। एक तरह से यह लिखना शुरू करने से पहले पूरे आलेख में क्या होगा, किस क्रम में होगा और किस तरह से प्रस्तुत किया जाएगा, इसका एक पूरा खाका तैयार करना है।

- फीचर में कुछ खास तत्वों की अपेक्षा की जाती है, जो उसे दिलचस्प और पठनीय बनाते हैं– जैसे, ड्रामा, ऊर्जा, फीचर के चरित्र, उद्धरण, यादगार लम्हे, सूचनाएं/तथ्य, चित्रात्मक विवरण और आकर्षक भाषा। इन तत्वों को आपस में गूंथकर ही अच्छा फीचर तैयार होता है।

- फीचर लेखक को यह भी ध्यान रखना चाहिए कि वह किस समाचारपत्र/पत्रिका के लिए लिख रहा है, उसकी फीचर शैली क्या है, फीचर का विषय किस तरह का है और उस फीचर का लक्षित पाठक वर्ग कौन है।

- फीचर का प्रारंभ बहुत महत्वपूर्ण होता है। हालांकि फीचर का प्रारंभ उसके मध्य और अंत के साथ जुड़ा होता है और फीचर को हमेशा उसकी समग्रता में देखना चाहिए। लेकिन कहते हैं कि शुरूआत अच्छी हो जाए तो मध्य और अंत भी बेहतर होने की संभावना बढ़ जाती है।

- फीचर में क्या होगा और किस क्रम में होगा—यह बिंदुवार एक पृष्ठ पर लिख लीजिए। अब आप चाहें तो इसमें से किसी भी एक दिलचस्प बिंदु से फीचर शुरू करके वृत्ताकार घूमते हुए वापस वहीं लौटकर फीचर समाप्त कर सकते हैं। यह तरीका बहुत कारगर रहता है लेकिन इसकी सफलता बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करती है कि आपने फीचर के महत्वपूर्ण बिंदुओं का क्रम कितने तार्किक तरीके से सजाया है।

- फीचर के ढांचे का अर्थ यह है कि लेखक को पता होना चाहिए कि अगर वह एक हजार शब्दों का फीचर लिख रहा है तो उसकी मुख्य थीम या एंगल क्या होगा, उसमें और क्या—क्या बातें होंगी और उन्हें पैराग्राफ—दर—पैराग्राफ मोतियों की तरह माला में कैसे गुंथा जाएगा। शुरूआत के बाद फीचर को आगे बढ़ाने के लिए यह स्पष्टता बहुत जरूरी है। फीचर शुरू से आखिर तक पाठकों को बांधे

रख सके, इसके लिए उसमें प्रवाह और गति बनी रहनी चाहिए। कहने का तात्पर्य यह है कि एक पैराग्राफ से दूसरे पैराग्राफ की ओर बढ़ते हुए पाठक को झटका न लगे, प्रवाह सहज बना रहे और कहानी भी आगे बढ़ती रहे।

- फीचर में गति और प्रवाह बनाए रखने की कुंजी पैराग्राफों को एक–दूसरे से गूंथने की कला में निहित है। इसका आसान तरीका यह है कि पैराग्राफ छोटे–छोटे हों और हर पैराग्राफ में मुख्य थीम से जुड़ी किसी सहायक थीम को उठाया जाए।

- फीचर में गति और प्रवाह के जरिए पाठकों की दिलचस्पी बनाए रखने और साथ ही उसमें रंग भरने के लिए फीचर के चरित्रों/पात्रों के उद्धरणों का इस्तेमाल किया जाता है। दरअसल, बिना उद्धरण के फीचर निर्जीव और उबाऊ हो जाते हैं।

- उद्धरणों, खासकर सीधे या प्रत्यक्ष उद्धरणों का इस्तेमाल सोच–समझकर करना। फीचर को गैर–जरूरी उद्धरणों से भरने से बचना चाहिए। खासकर लंबे और उबाऊ सूचनात्मक उद्धरण फीचर के प्रवाह को बाधित करते हैं। सीधे उद्धरण के लिए आपको किसी दिलचस्प, उत्तेजक, अलग किस्म के, भावुक, अनपेक्षित, विवादास्पद, टकरावपूर्ण या मजाकिया बयान को चुनना चाहिए।

- फीचर का जादू बहुत हद तक उसकी भाषा के जरिए अभिव्यक्त होता है। फीचर की भाषा आम बोलचाल की भाषा होती है लेकिन वह थोड़ी नरम, मन को छूनेवाली और आम समाचारों की भाषा से कुछ अलग होती है।

- फीचर लिखते हुए सरल भाषा का प्रयोग कीजिए। सरल भाषा का अर्थ यह है कि शब्दों के चुनाव में सटीक और वाक्य संरचना में स्पष्ट रहिए। इसका सबसे आसान उपाय यह है कि छोटे और सरल वाक्य लिखिए।

अभ्यास

1) फीचर लेखन के लिए सामग्री संकलन की प्रक्रिया उदाहरण सहित (लगभग 200 शब्दों में) स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

....

....

2) फीचर लेखन के प्रारंभ में किन बातों का ध्यान रखना चाहिए। किसी विषय पर फीचर के पहले दो पैराग्राफ (लगभग 80 से 100 शब्दों में) लिखिए।

....

....

....

....

3) फीचर में फोटो और ग्राफिक्स के महत्व को (लगभग 150 शब्दों में) स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

....

....

5.6 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

इकाई को ध्यान से पढ़कर स्वयं उत्तर लिखिए।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY